Subhe Baharan (Hindi)

सफ़हात कुल : 38

गुन्चे चटके, फूल महके हर तरफ़ आई बहार
हो गई सुब्हे बहारां ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

सुब्हे बहारां

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

सुब्ह़े बहारां

येह रिसाला **(सुब्ह़े बहारां)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

सुब्हे बहारां

या रब्बल मुस्त़फ़ा जो कोई इस रिसाले ''सुब्हे बहारां'' के 35 सफ़ह़ात पढ़ या सुन ले, जश्ने विलादत के सदक़े उसे मरते वक़्त अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **का दीदार नसीब फ़रमा ।** اٰمِیْن بِجَاهِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **है :** ''जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा, **अल्लाह** पाक उस पर सो (100) रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है।''

(مُعجَم اَوسَط ج٥ ص ٢٥٢ حديث ٧٢٣٥)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد

रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ तो क्या आता है हर त़रफ़ गोया मौसिमे बहार आ जाता है। **अल्लाह** करीम के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीवानों में ख़ुशी की लह्र दौड़ जाती है, बूढ़ा हो या जवान हर ह़क़ीक़ी आ़शिक़े रसूल मुसल्मान गोया दिल की ज़बान से बोल उठता है **:**

निसार तेरी चहल पहल पर, हज़ार ईदें रबीउ़ल अव्वल
सिवाए इब्लीस के जहां में, सभी तो ख़ुशियां मना रहे हैं

(दीवाने सालिक, स. 13)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد

जब दुन्या में हर त़रफ़ कुफ़्रो शिर्क और ज़ुल्मो ज़ियादती का घुप अंधेरा छाया हुवा था, 12 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ को मक्कए पाक में ह़ज़रते बीबी आमिना رَضِیَ اللہُ عَنْھَا के मुबारक मकान से एक ऐसा नूर चमका जिस ने सारे आ़लम को जगमग जगमग कर दिया। रोती हुई इन्सानिय्यत की आंख जिन की त़रफ़ लगी हुई थी, वोह **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم तमाम जहानों के लिये रह़मत बन कर दुन्या में तशरीफ़ लाए।

मुबारक हो कि ख़त्मुल मुरसलीं तशरीफ़ ले आए
जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीं तशरीफ़ ले आए

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सुब्हे बहारां

रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم ने 12 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ को सुब्हे सादिक़ के वक़्त दुन्या में तशरीफ़ ला कर बे सहारों, ग़म के मारों, दुख्यारों और दर दर की ठोकरें खाने वाले बेचारों की शामे ग़रीबां को "सुब्हे बहारां" बना दिया।

मुसल्मानो ! सुब्हे बहारां मुबारक !
वोह बरसाते अन्वार सरकार आए

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 499)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

12 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़[1] को नूर वाले आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم की दुन्या में जल्वा गरी होते ही कुफ़्रो ज़ुल्मत के बादल छट गए, शाहे ईरान

[1]: السيرةُ النَّبَوية لابنِ هشام ص٦٦

"किस्रा" के मह़ल पर ज़ल्ज़ला आया और मह़ल के चौदह कंगुरे (या'नी वोह त़ाक़्चे जो मह़ल की ख़ूब सूरती के लिये बनाए गए थे वोह) गिर गए। ईरान के आतश कदे (या'नी वोह मकान जहां आग की पूजा की जाती थी) की आग बुझ गई जो एक हज़ार साल से (जल रही थी और) कभी न बुझी थी, "दरियाए सावह" ख़ुश्क हो गया, बुत सर के बल गिर पड़े[1] और का'बे को वज्द आ गया।[2]

तेरी आमद थी कि बैतुल्लाह मुजरे को झुका
तेरी हैबत थी कि हर बुत थरथरा कर गिर गया

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 41)

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : आमद : आना। **मुजरा :** सलाम। **हैबत :** रो'ब।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जहां में फ़ज़्लो रह़मत बन कर तशरीफ़ लाए और यक़ीनन **अल्लाह** पाक की रह़मत नाज़िल होने (या'नी उतरने) का दिन ख़ुशी व मसर्रत का दिन होता है। चुनान्चे **अल्लाह** करीम पारह 11 **सूरए यूनुस** आयत 58 में इर्शाद फ़रमाता है :

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَ بِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝۵۸

(پ۱۱، یونس:۵۸)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ **अल्लाह** ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत और इसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें। वोह उन के सब धन दौलत से बेहतर है।

अल्लाहु अक्बर ! फ़ज़्लो रह़मते ख़ुदावन्दी पर ख़ुशी मनाने का ख़ुद कु़रआने करीम हुक्म दे रहा है, और क्या रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से

1: هواتف الجنان للخرائطی ۳۷، ۵۶ رقم ۱۶۰۷
2: السيرة الحلبية ج۱ ص۱۰۵

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** पाक उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

बढ़ कर भी कोई **अल्लाह** पाक की रह़मत है ? देखिये मुक़द्दस क़ुरआन के पारह 17 **सूरतुल अम्बियाअ** आयत 107 में साफ़ साफ़ ए'लान है :

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۷﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने तुम्हें न भेजा मगर रह़मत सारे जहान के लिये।

सह़ाबे रह़मते बारी है बारहवीं तारीख़
करम का चश्मए जारी है बारहवीं तारीख़

(ज़ौक़े ना'त, स. 121)

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : सह़ाबे रह़मत : रह़मत का बादल। **बारी :** पैदा करने वाला।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

शबे क़द्र से भी अफ़्ज़ल रात

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''बेशक नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ''शबे विलादत'' शबे क़द्र से भी अफ़्ज़ल है क्यूं कि शबे विलादत सरकारे काएनात صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस दुन्या में जल्वा गर होने (या'नी आने) की रात है जब कि लैलतुल क़द्र ताजदारे अ़रब, मह़बूबे रब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अ़ता कर्दा शब है और जो रात **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत (BIRTH) की वज्ह से इ़ज़्ज़त वाली बनी हो वोह उस रात से ज़ियादा इ़ज़्ज़तो एह़तिराम वाली है जिस ने फ़िरिश्तों के उतरने की वज्ह से इ़ज़्ज़त पाई है।''

(مَا ثَبَتَ بِالسُّنَّة ص ۱۰۰)

ईदों की ईद

اَلْحَمْدُ لِلّٰه 12 रबीउ़ल अव्वल मुसल्मानों के लिये ईदों की भी ईद है यक़ीनन हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जहां में शाहे बह़रो बर (या'नी ज़मीन

और समुन्दर के बादशाह) बन कर जल्वा गर (या'नी ज़ाहिर) न होते तो कोई ईद, ईद होती, न कोई शब, शबे बराअत। बल्कि कौनो मकान (या'नी दुन्या) की सारी रौनक़ो शान उस जाने जहान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم के क़दमों की धूल का सदक़ा है।

वोह जो न थे तो कुछ न था, वोह जो न हों तो कुछ न हो
जान हैं वोह जहान की, जान है तो जहान है

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 126)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मीलाद और अबू लहब (ह़िकायत)

जब अबू लहब मर गया तो उस के बा'ज़ घर वालों ने उसे ख़्वाब में बुरे ह़ाल में देखा। पूछा : (मरने के बा'द) क्या मिला ? बोला : तुम से जुदा हो कर (या'नी मर कर) मुझे कोई भलाई नसीब न हुई। फिर अपने अंगूठे के नीचे मौजूद सूराख़ की त़रफ़ इशारा करते हुए कहने लगा : सिवाए इस के कि इस में से मुझे पानी पिला दिया जाता है क्यूं कि मैं ने **सुवैबा** लौंडी को आज़ाद किया था।

(مُصَنَّف عَبْدُ الرَّزّاق ج٩ص٩ حديث١٦٦٦١ وعُمدةُ القارى ج١٤ص٤٤ تحت الحديث١٠١ ٥)

(सुवैबा ने इस्लाम क़बूल किया और सह़ाबिय्या बनीं رَضِیَ اللهُ عَنْهَا اَلْحَمْدُ لِلّٰه) ह़ज़रते अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐ़नी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस इशारे का मत़लब येह है कि मुझे थोड़ा सा पानी दिया जाता है। (عُمدةُ القارى ايضًا)

मीलाद और मुसल्मान

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस रिवायत के तअ़ल्लुक़ से फ़रमाते हैं : इस ह़िकायत में मीलाद शरीफ़ मनाने वालों के लिये बड़ी दलील है जो ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم की शबे विलादत

में ख़ुशियां मनाते और माल ख़र्च करते हैं, या'नी अबू लहब जो कि काफ़िर था जब वोह ताजदारे नुबुव्वत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत की ख़बर पा कर ख़ुश होने और अपनी लौंडी (सुवैबा) को दूध पिलाने की ख़ात़िर आज़ाद करने पर बदला दिया गया तो उस मुसल्मान का क्या ह़ाल होगा जो मह़ब्बत व ख़ुशी से भरा हुवा है और माल ख़र्च कर रहा है। लेकिन येह ज़रूरी है कि मह़फ़िले मीलाद शरीफ़ आलाते मूसीक़ी वग़ैरा से पाक हो। (مدارِجُ النُّبوّت ج۲ص۱۹)

जश्ने विलादत की धूम मचाइये

ऐ आ़शिक़ाने मीलाद ! धूमधाम से ईदे मीलाद मनाइये कि जब अबू लहब जैसे काफ़िर को भी विलादत की ख़ुशी करने पर फ़ाएदा पहुंचा तो हम तो اَلْحَمْدُ لِلّٰه मुसल्मान हैं। अबू लहब ने **अल्लाह** पाक के रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निय्यत से नहीं बल्कि सिर्फ़ अपने भतीजे की विलादत (BIRTH) की ख़ुशी मनाई और अपनी लौंडी **सुवैबा** को दूध पिलाने के लिये आज़ाद किया इस पर उस को बदला मिला तो हम अगर **अल्लाह** करीम की रिज़ा के लिये अपने आक़ा व मौला **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत (BIRTH) की ख़ुशी मनाएंगे तो क्यूंकर मह़रूम रहेंगे।

शबे विलादत में सब मुसल्मां, न क्यूं करें जानो माल क़ुरबां
अबू लहब जैसे सख़्त काफ़िर, ख़ुशी में जब फ़ैज़ पा रहे हैं

(दीवाने सालिक, स. 13)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

मीलाद मनाने वालों से सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुश होते हैं

एक आ़लिम साह़िब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : اَلْحَمْدُ لِلّٰه मुझे ख़्वाब में **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई, मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या आप को मुसल्मानों का हर साल

आप की विलादते मुबारक की खुशियां मनाना पसन्द आता है ? इर्शाद फ़रमाया : "जो हम से खुश होता है हम भी उस से खुश होते हैं ।"

(سبلُ الھدی ج۱ص۳۶۳, फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 754, تذکرۃُ الواعظین ص۱۲۵)

विलादत की ख़ुशी में झन्डे

हज़रते बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھَا फ़रमाती हैं : मैं ने देखा कि तीन झन्डे नस्ब किये (या'नी लगाए) गए । एक मशरिक़ (या'नी EAST) में, दूसरा मग़रिब (या'नी WEST) में, तीसरा का'बे की छत पर और हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत (BIRTH) हो गई ।

(دلائل النبوۃ لابی نعیم ص۳۶۳رقم۵۵۵مختصراً)

रूहुल अमीं ने गाड़ा का'बे की छत पे झन्डा
ता अ़र्श उड़ा फरेरा सुब्हे शबे विलादत

(ज़ौक़े ना'त, स. 95)

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : रुहुल अमीन : हज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام का लक़ब । **फरेरा :** झन्डा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

झन्डे के साथ जुलूस

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जब मदीनए पाक की त़रफ़ हिजरत फ़रमाई और मदीने शरीफ़ के क़रीब "मौज़ए ग़मीम" में पहुंचे तो बुरैदा अस्लमी, क़बीलए बनी सहम के 70 सुवार ले कर सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को مَعَاذَاللّٰہ गिरिफ़्तार करने आए, मगर सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की निगाहे फ़ैज़ आसार से खुद ही महब्बते शाहे अबरार صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में गिरिफ़्तार हो कर पूरे क़ाफ़िले समेत मुशर्रफ़ ब इस्लाम (या'नी मुसल्मान)

हो गए। अब अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मदीने शरीफ़ में आप का दाख़िला अ़लम (या'नी झन्डे) के साथ होना चाहिये। फिर उन्हों ने अपना इ़मामा सर से उतार कर नेज़े पर बांध लिया और रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आगे आगे रवाना हुए।

(اَخلاقُ النّبی وآدابه لابی الشّیخ ص۱٤٤رقم ۷٤۷ ملخّصًا)

महबूबे रब्बे अक्बर, तशरीफ़ ला रहे हैं आज अम्बिया के सरवर, तशरीफ़ ला रहे हैं
क्यूं है फ़ज़ा मुअ़त्तर ! क्यूं रोशनी है घर घर अच्छा ! हबीबे दावर, तशरीफ़ ला रहे हैं
ईदों की ईद आई, रहमत ख़ुदा की लाई जूदो सख़ा के पैकर, तशरीफ़ ला रहे हैं
हूरें लगीं तराने, ना'तों के गुनगुनाने हूरो मलक के अफ़्सर, तशरीफ़ ला रहे हैं
आ़लम में जो हैं यक्ता, बे मिस्ल हैं जो आक़ा वोह आमिना तेरे घर, तशरीफ़ ला रहे हैं

अ़त्तार अब ख़ुशी से, फूला नहीं समाता
दुन्या में इस के सरवर, तशरीफ़ ला रहे हैं

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 301 ता 304)

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : सरवर : सरदार, बादशाह। **मुअ़त्तर :** ख़ुशबूदार। **दावर : अल्लाह** पाक का नाम, इन्साफ़ करने वाला। **जूदो सख़ा के पैकर :** सख़ावत के मुकम्मल नुमूने। **हूर :** जन्नत की ख़ूब सूरत औ़रतें जो जन्नतियों की ख़िदमत करेंगी। **यक्ता :** अकेला, बे मिसाल।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

जश्ने विलादत मनाने वाला ख़ानदान

मदीने शरीफ़ में इब्राहीम नाम का एक शख़्स मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीवाना रहा करता था। हमेशा ह़लाल रोज़ी कमाता और अपनी आमदनी (INCOM) का आधा ह़िस्सा **जश्ने विलादत** मनाने के लिये

अलग से जम्अ़ करता।[1] **रबीउ़ल अव्वल** शरीफ़ तशरीफ़ लाता तो धूमधाम से मगर शरीअ़त के दाएरे में रह कर **जश्ने विलादत** मनाता। **अल्लाह** पाक के महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ईसाले सवाब के लिये ख़ूब लंगर करता और अच्छे अच्छे कामों में अपनी रक़म ख़र्च करता। उस की बीवी भी प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बहुत दीवानी थी और इन कामों में पूरा तआ़वुन करती। बीवी की वफ़ात हो गई मगर इब्राहीम के जश्ने विलादत मनाने में फ़र्क़ न आया। इब्राहीम ने एक दिन अपने नौ जवान बेटे को वसिय्यत की : "प्यारे बेटे ! आज रात मेरी वफ़ात हो जाएगी, मेरी तमाम तर पूंजी (या'नी दौलत) में पचास दिरहम और उन्नीस (19) गज़ कपड़ा है। कपड़ा कफ़न दफ़्न पर ख़र्च करना और हो सके तो रक़म भी नेक काम में ख़र्च कर देना।" इस के बा'द उस ने कलिमए त़य्यिबा पढ़ा और वफ़ात पा गया।

बेटे ने वसिय्यत के मुत़ाबिक़ वालिदे मर्हूम को सिपुर्दे ख़ाक कर दिया। अब पचास दिरहम नेक काम में ख़र्च करने के मुआ़मले में उस को समझ नहीं आती थी कि क्या करे। इसी फ़िक्र में रात जब सोया तो ख़्वाब में देखा कि क़ियामत क़ाइम और हर त़रफ़ नफ़्सी नफ़्सी का आ़लम है, ख़ुश नसीब लोग सूए जन्नत रवां दवां हैं, जब कि मुजरिमों को घसीट घसीट कर जहन्नम की त़रफ़ हांका जा रहा है और येह खड़ा थरथर कांप रहा है कि इस के बारे में न जाने क्या फ़ैसला होता है। इतने में ग़ैब से आवाज़ आई : "इस नौ जवान को जन्नत में जाने दो।" वोह ख़ुशी ख़ुशी जन्नत में दाख़िल हो गया और सैर करने लगा। सातों जन्नतों की सैर करने के बा'द जब आठवीं जन्नत की त़रफ़ बढ़ा तो दारोग़ए जन्नत ह़ज़रते रिज़वान (عَلَيْهِ السَّلَام) ने

1 : काश ! हम अपनी आमदनी का आधा न सही बारहवां ह़िस्सा बल्कि एक फ़ीसद ही जश्ने विलादत के लिये निकाल कर उसे दीन के कामों में सर्फ़ करने का ह़ौसला रखते।

फ़रमाया : ''इस जन्नत में सिर्फ़ वोही दाख़िल हो सकता है जिस ने **माहे रबीउ़ल अव्वल** में विलादते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दिनों में ख़ुशी मनाई हो।'' येह सुन कर उस ने सोचा कि मेरे वालिदैने मर्हूमैन इसी में होने चाहिएं। इतने में आवाज़ आई : ''इस नौ जवान को अन्दर आने दो, इस के वालिदैन इस से मिलना चाहते हैं।'' लिहाज़ा वोह अन्दर दाख़िल हुवा। उस ने देखा कि उस की वालिदए मर्हूमा नहरे कौसर के क़रीब बैठी है, साथ ही एक तख़्त बिछा है जिस पर एक बुज़ुर्ग ख़ातून जल्वा अफ़रोज़ (या'नी बैठी) हैं और उस के इर्द गिर्द कुर्सियां बिछी हैं जिन पर कुछ पुर वक़ार ख़वातीन तशरीफ़ फ़रमा हैं। इस ने एक फ़िरिश्ते से पूछा : येह ख़वातीन कौन हैं ? उस ने बताया :

''तख़्त पर शहज़ादिये कौनैन ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا हैं और कुर्सियों पर ख़दीजतुल कुब्रा, आइशा सिद्दीक़ा, बीबी मरयम, बीबी आसिया, बीबी सारह, बीबी हाजिरा, बीबी राबिआ़ और बीबी ज़ुबैदा (رِضْوَانُ اللهِ عَنْهُنَّ) हैं।'' इसे बहुत ख़ुशी हुई, मज़ीद आगे बढ़ा तो क्या देखता है कि एक बहुत ही अ़ज़ीम तख़्त बिछा है और उस पर मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपना चांद सा चेहरा चमकाते रौनक़ अफ़रोज़ (या'नी बैठे हुए) हैं। इर्द गिर्द चार कुर्सियां बिछी हुई हैं उन पर ख़ुलफ़ाए राशिदीन عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तशरीफ़ फ़रमा हैं। सीधी त़रफ़ सोने की कुर्सियों पर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام तशरीफ़ फ़रमा (या'नी बैठे हुए) और बाईं (LEFT) जानिब शुहदाए किराम जल्वा फ़रमा (या'नी बैठे हुए) हैं। इतने में उस के वालिदे मर्हूम इब्राहीम भी **अल्लाह** पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़रीब ही झुरमट (या'नी हुजूम) में नज़र आ गए। **वालिद साह़िब** ने अपने बेटे को

सीने से लगा लिया, वोह बहुत ख़ुश हुवा और सुवाल किया : अब्बूजान ! आप को येह आ़लीशान रुत्बा क्यूंकर ह़ासिल हुवा ? जवाब दिया : اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! **येह जश्ने विलादत मनाने का बदला है।** इस के बा'द उस नौ जवान की आंख खुल गई।

सुब्ह़ होते ही उस ने अपना मकान कम क़ीमत में ही बेच दिया और वालिदे मर्ह़ूम के बचे हुए पचास दिरहम के साथ अपनी सारी रक़म मिला कर खाने का इन्तिज़ाम किया और उ़लमा व सुलह़ा की दा'वत की। उस का दिल दुन्या से उचाट हो चुका था, चुनान्चे मस्जिद में इ़बादत और उसी की ख़िदमत में मश्ग़ूल रहने लगा और अपनी ज़िन्दगी के बाक़ी बचे हुए तीस (30) साल इसी त़रह़ गुज़ार दिये। बा'दे वफ़ात उस को किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : क्या गुज़री ? बोला : **मुझे जश्ने विलादत मनाने की बरकत से जन्नत में अपने वालिदे मर्ह़ूम के पास पहुंचा दिया गया है।** (تذکرۃ الواعظین ص۱۲۵ بتغیر) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

बख़्श दे मुझ को इलाही ! बहरे मीलादुन्नबी
नामए आ'माल इस्यां से मेरा भरपूर है

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 484)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

जश्ने विलादत मनाने का सवाब

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत की रात ख़ुशी मनाने वालों की जज़ा (या'नी बदला) येह है कि **अल्लाह** पाक उन्हें फ़ज़्लो करम से

जन्नातुन्नईम (या'नी ने'मत वाली जन्नतों) में दाख़िल फ़रमाएगा। मुसल्मान हमेशा से महफ़िले मीलाद करते आए हैं और विलादत की ख़ुशी में दा'वतें देते, खाने पकवाते और ख़ूब सदक़ा व ख़ैरात देते आए हैं। ख़ूब ख़ुशी का इज़्हार करते और दिल खोल कर ख़र्च करते हैं, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत के ज़िक्र का इन्तिज़ाम करते हैं और अपने मकानों को सजाते हैं और इन तमाम नेक कामों की बरकत से इन लोगों पर **अल्लाह** पाक की रह़मतें उतरती हैं। **(مَاثَبَتَ بِالسُّنَّة ص ۱۰۲ ملخصاً)**

ज़माने भर में येह क़ाइ़दा है, कि जिस का खाना उसी का गाना
तो ने'मतें जिन की खा रहे हैं, उन्हीं के हम गीत गा रहे हैं

(दीवाने सालिक, स. 13)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

यहूदियों को ईमान नसीब हो गया

ह़ज़रते अ़ब्दुल वाह़िद बिन इस्माईल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मिस्र में एक आ़शिक़े रसूल रहा करता था जो रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ में **अल्लाह** पाक के प्यारे मह़बूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ूब जश्ने विलादत मनाया करता था। एक बार रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ के महीने में उन की यहूदन पड़ोसन ने अपने शौहर से पूछा : हमारा मुसल्मान पड़ोसी माहे रबीउ़ल अव्वल में हर साल ख़ुसूसी दा'वत वग़ैरा क्यूं करता है ? यहूदी ने बताया कि इस महीने में इस के नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत (BIRTH) हुई थी लिहाज़ा येह उन का **जश्ने विलादत** मनाता है (और मुसल्मान इस महीने की बहुत ता'ज़ीम (RESPECT) किया करते हैं)। इस पर यहूदन ने कहा : ''वाह !

मुसल्मानों का त़रीक़ा भी कितना प्यारा है कि येह लोग अपने नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हर साल **जश्ने विलादत** मनाते हैं।'' वोह यहूदन रात जब सोई तो उस की सोई हुई क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, ख़्वाब में क्या देखती है कि एक निहायत ही ह़सीनो जमील बुज़ुर्ग तशरीफ़ लाए हैं, इर्द गिर्द लोगों का हुजूम (या'नी भीड़) है। इस ने आगे बढ़ कर एक शख़्स से पूछा : येह बुज़ुर्ग कौन हैं ? उस ने बताया : ''येह आख़िरी नबी **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, आप इस लिये तशरीफ़ लाए हैं ताकि तुम्हारे मुसल्मान पड़ोसी को **जश्ने विलादत** मनाने पर ख़ैरो बरकत अ़त़ा फ़रमाएं, उन से मुलाक़ात करें।'' यहूदन ने फिर पूछा : क्या आप के नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरी बात का जवाब देंगे ? उस ने जवाब दिया : जी हां। इस पर यहूदन ने **अल्लाह** करीम के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पुकारा। आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब में फ़रमाया : **लब्बैक** (या'नी मौजूद हूं)। इस आ़जिज़ाना जवाब से वोह मुतअस्सिर हुई और कहने लगी : मैं तो मुसल्मान नहीं हूं, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फिर भी मुझे **लब्बैक** (या'नी मौजूद हूं) कह कर जवाब दिया। **अल्लाह** करीम के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** पाक की त़रफ़ से मुझे बताया गया है कि तू मुसल्मान होने वाली है।'' इस पर वोह पुकार उठी : बेशक आप नबिय्ये करीम, साह़िबे ख़ुल्क़े अ़ज़ीम (या'नी बेहतरीन अख़्लाक़ वाले) हैं, जो आप की ना फ़रमानी करे वोह हलाक हुवा और जो आप की इ़ज़्ज़तो शान न जाने वोह ख़ाइबो ख़ासिर (या'नी नुक़्सान उठाने वाला) हुवा। फिर उस ने (ख़्वाब ही ख़्वाब में) कलिमए शहादत पढ़ा।

अब उस की आंख खुल गई और वोह सच्चे दिल से कलिमा पढ़ कर मुसल्मान हो गई और उस ने येह तै कर लिया कि सुब्ह उठ कर सारी पूंजी (या'नी दौलत) **अल्लाह** पाक के प्यारे महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **जश्ने विलादत** की खुशी में लुटा दूंगी और ख़ूब नज़्रो नियाज़ करूंगी। जब सुब्ह उठी तो उस का शौहर दा'वते तआम (या'नी खाने की दा'वत) की तय्यारी में मसरूफ़ था। उस औरत ने हैरत से पूछा : आप येह क्या कर रहे हैं ? उस ने कहा : इस बात की खुशी में दा'वत का इन्तिज़ाम कर रहा हूं कि तुम मुसल्मान हो चुकी हो। पूछा : आप को कैसे मा'लूम हुवा ? उस ने बताया : मैं भी रात सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ईमान ला चुका हूं।

(تذكرةُ الواعظين ص ١٢٤ ملخصًا)

अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

आमदे सरकार से ज़ुल्मत हुई काफ़ूर है
क्या ज़मीं, क्या आस्मां, हर सम्त छाया नूर है

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 483)

अल्फ़ाज़ व मआनी : ज़ुल्मत : अंधेरा। **काफ़ूर :** दूर।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी और जश्ने विलादत

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आशिक़ाने रसूल की मदनी तहरीक, दा'वते इस्लामी का **जश्ने विलादत** मनाने का अपना एक मुन्फ़रिद (या'नी अनोखा) अन्दाज़ है,

दुन्या के बे शुमार ममालिक में दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शब (या'नी रबीउ़ल अव्वल की बारहवीं रात) अ़ज़ीमुश्शान **इज्तिमाए़ मीलाद** होता है। इस की बरकतों के क्या कहने ! इस में शिर्कत करने वाले न जाने कितने ही ख़ुश नसीब नेक नमाज़ी बन जाते हैं। इस बारे में **तीन मदनी बहारें** सुनिये :

﴾1﴿ गुनाह का इ़लाज मिल गया

एक आ़शिक़े रसूल का कुछ इस त़रह़ बयान है : शबे ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (1426 हिजरी) के दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से होने वाले **इज्तिमाए़ मीलाद** में मेरे एक जानने वाले बे नमाज़ी और मॉडर्न नौ जवान ने शिर्कत की, ''सुब्हे बहारां'' के इस्तिक़्बाल के वक़्त **दुरूदो सलाम** की गूंज और **मरह़बा या मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की धूम के दौरान उन के दिल की दुन्या ज़ेरो ज़बर हो (या'नी बदल) गई, नेकियों की त़रफ़ रग़्बत और गुनाहों से नफ़्रत का जज़्बा मिला, उन्हों ने हाथों हाथ (या'नी उसी वक़्त) नमाज़ की पाबन्दी और चेहरे पर दाढ़ी सजाने की निय्यत की और वोह सचमुच नमाज़ी बने और दाढ़ी भी सजा ली। उन के अन्दर एक ''बुराई'' की ख़राब आ़दत थी, **इज्तिमाए़ मीलाद** की बरकत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه वोह भी दूर हो गई। दूसरे अल्फ़ाज़ में यूं कहिये कि इज्तिमाए़ मीलाद में शिर्कत की बरकत से गुनाहों के मरीज़ को गुनाहों का इ़लाज मिल गया !

मांग लो मांग लो उन का ग़म मांग लो चश्मे रह़मत निगाहे करम मांग लो
मा'सियत की दवा ला जरम मांग लो मांगने का मज़ा आज की रात है

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : चश्मे रह़मत : रह़मत की नज़र। **मा'सियत :** ना फ़रमानी। **ला जरम :** बेशक, यक़ीनन।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴿2﴾ दिल का मैल धो दिया

एक शख़्स पर माहे रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ के इब्तिदाई दिनों में बा'ज़ आ़शिक़ाने रसूल ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए दा'वते इस्लामी के **इज्तिमाए़ मीलाद** में शिर्कत की दा'वत दी। उन की ख़ुश क़िस्मती कि उन्हों ने हामी भर ली (या'नी हां कह दिया), जब 12वीं शब आई तो ह़स्बे वा'दा **इज्तिमाए़ मीलाद** में जाने के लिये वोह ख़ुसूसी बस में सुवार हो गए। एक आ़शिक़े रसूल ने एक अ़दद चमचम नामी मिठाई में से तक़रीबन तीस इस्लामी भाइयों में तोड़ तोड़ कर टुक्ड़ियां तक़्सीम कीं, तक़्सीम करने वाले का मह़ब्बत भरा अन्दाज़ उन के दिल को बहुत भाया। आख़िर कार वोह सब **इज्तिमाए़ मीलाद** में पहुंच गए। उन्हों ने ज़िन्दगी में पहली बार ही ऐसे रूह़ परवर मनाज़िर देखे थे, ना'तों, सलामों और **मरह़बा या मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पुरकैफ़ ना'रों ने **दिल का मैल धो दिया।** اَلْحَمْدُ لِلّٰه वोह हाथों हाथ दा'वते इस्लामी से वाबस्ता हो गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन्हों ने चेहरे पर दाढ़ी मुबारक और सर पर इमामा शरीफ़ सजाने की सआ़दत ह़ासिल की और दा'वते इस्लामी का दीनी काम करने लगे।

अ़त़ाए ह़बीबे ख़ुदा मदनी माह़ोल है फ़ैज़ाने ग़ौसो रज़ा मदनी माह़ोल
यहां सुन्नतें सीखने को मिलेंगी दिलाएगा ख़ौफ़े ख़ुदा मदनी माह़ोल

यक़ीनन मुक़द्दर का वोह है सिकन्दर

जिसे ख़ैर से मिल गया मदनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 646, 647)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴿3﴾ आज भी जल्वे आ़म हैं

एक आ़शिक़े रसूल का कुछ इस त़रह़ का बयान है **:** शबे ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से होने वाले बड़ी रात के **इज्तिमाए़ मीलाद** में हम चन्द इस्लामी भाई भी शरीक हुए। एक इस्लामी भाई कहने लगे **: दा'वते इस्लामी के इज्तिमाए़** मीलाद में पहले काफ़ी रिक़्क़त हुवा करती थी अब वोह बात नहीं रही। येह सुन कर दूसरा बोला **:** यार ! आप की यहां भूल हो रही है, **इज्तिमाए़ मीलाद** की कैफ़िय्यत तो वोही है मगर हमारे दिलों की कैफ़िय्यत पहले की सी नहीं रही, ज़िक्रे रसूल भला कैसे बदल सकता है ! हमारी सोच तब्दील हो गई है ! अगर आज भी हम तन्क़ीद की ख़ुश्क वादियों में भटक्ने के बजाए अ़क़ीदत के साथ ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़सीन तसव्वुर में डूब कर ना'त शरीफ़ सुनें तो اِنْ شَآءَاللّٰه करम बालाए करम होगा। पहले इस्लामी भाई का शैत़ानी वस्वसों पर मब्नी ग़ैर ज़िम्मेदाराना ए'तिराज़ अगर्चे क़दमों को डगमगा देने वाला और इज्तिमाए़ मीलाद से मह़रूम कर के वापस घर पहुंचाने वाला था मगर दूसरे इस्लामी भाई का जवाब सद करोड़ मरह़बा ! कि वोह ग़फ़्लत से जगाने वाला और शैत़ान को भगाने वाला था। चुनान्चे वोह दुरुस्त जवाब तासीर का तीर बन कर मदनी बहार बयान करने वाले के

जिगर में पैवस्त हो गया उन्हों ने हिम्मत की, क़दम उठाए और **इज्तिमाए़ मीलाद** के बीच में जा पहुंचे और आ़शिक़ाने रसूल के अन्दर जम कर बैठ गए और ना'तों के पुरकैफ़ नग़मों में खो गए। **सुब्हे सादिक़** का सुहाना वक़्त क़रीब आया, आ़शिक़ाने रसूल **सुब्हे बहारां** के इस्तिक़्बाल के लिये खड़े हो गए, इज्तिमाअ़ पर एक वज्द सा त़ारी था, हर त़रफ़ **मरह़बा** की धूमें मची थीं, शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में दुरूदो सलाम के गुलदस्ते पेश किये जा रहे थे, आ़शिक़ाने रसूल की आंखों से आंसू जारी थे, हर त़रफ़ से आहों और सिस्कियों की आवाज़ें आ रही थीं, उन पर भी अ़जीब कैफ़ो मस्ती त़ारी थी, **उन की आंखों ने हर त़रफ़ हलकी हलकी बुंदकियां** (या'नी बहुत ही बारीक क़त़रे) **और ख़ुश गवार फुवार** (या'नी हलकी हलकी बारिश) **बरस्ती देखी, गोया सारे का सारा इज्तिमाअ़ बाराने रह़मत** (या'नी रह़मत की बारिश) **में नहा रहा था, वोह सर की आंखें बन्द किये प्यारे प्यारे आक़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **के ह़सीन तसव्वुर में गुम दुरूदो सलाम पढ़ने में मश़ग़ूल थे। यकायक दिल की आंखें खुल गईं, उन का कहना था कि सच कहता हूं, जिस का जश्ने विलादत मनाया जा रहा था उसी नबिय्ये मोह़तरम, रसूले मुकर्रम** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **ने मुझ सरापा गुनहगार पर करम बालाए करम फ़रमा दिया, और मुझे अपना दीदार करवा दिया,** اَلْحَمْدُ لِلّٰه **दीदारे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **से कलेजा ठन्डा हो गया।** वाक़ेई उस इस्लामी भाई ने बिल्कुल सच कहा था कि दा'वते इस्लामी का **इज्तिमाए़ मीलाद** तो पहले ही की त़रह़ सोज़ो रिक़्क़त वाला है, मगर हमारी अपनी कैफ़िय्यत बदल गई है अगर हम दुरुस्त रहें तो आज भी उन के जल्वे आ़म हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

आंख वाला तेरे जोबन का तमाशा देखे दीदए कूर को क्या आए नज़र क्या देखे

कोई आया पा के चला गया, कोई उ़म्र भर भी न पा सका

येह बड़े करम के हैं फ़ैसले, येह बड़े नसीब की बात है

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : जोबन : रौनक़, बहार। **दीदए कूर :** अन्धी आंख।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

"मरहबा या मुस्तफ़ा" के बारह हुरूफ़ की निस्बत से जश्ने विलादत के 12 मदनी फूल

﴾1﴿ **जश्ने विलादत** की ख़ुशी में मस्जिदों, घरों, दुकानों और सुवारियों पर नीज़ अपने महल्ले में भी मदनी परचम लहराइये, ख़ूब चराग़ां (या'नी लाइटिंग) कीजिये, अपने घर पर कम अज़ कम बारह (12) बल्ब तो ज़रूर रोशन कीजिये। रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ की बारहवीं रात हुसूले सवाब की निय्यत से **इज्तिमाए मीलाद** में शिर्कत कीजिये और सुब्हे सादिक़ के वक़्त मदनी परचम उठाए दुरूदो सलाम पढ़ते हुए अश्कबार आंखों के साथ **सुब्हे बहारां** का इस्तिक़्बाल कीजिये। 12 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ के दिन हो सके तो रोज़ा रख लीजिये कि **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पीर शरीफ़ को रोज़ा रख कर अपना यौमे विलादत मनाते थे जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में पीर (MONDAY) के रोज़े

के बारे में पूछा गया तो इर्शाद फ़रमाया : ''इसी दिन मेरी विलादत हुई और इसी रोज़ मुझ पर वह़ी नाज़िल हुई ।'' ((مُسلِم ص٥٩١ حديث١٩٨.(١١٦٢)) शारेह़े सह़ीह़ बुख़ारी ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम क़स्त़लानी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मह़फ़िले मीलाद करने के ख़्वास (या'नी तासीरों) से येह तजरिबा शुदा बात है कि इस साल अम्नो अमान रहता है और मुरादें जल्द पूरी होती हैं । **अल्लाह** करीम उस शख़्स पर रह़मत नाज़िल फ़रमाए जिस ने माहे विलादत (या'नी रबीउ़ल अव्वल शरीफ़) की रातों को (भी) ई़द बना लिया ।

(المواهبُ اللدنية ج١ص١٤٨ملخّصاً)

《2》 **का'बतुल्लाह शरीफ़** के नक़्शे (MODEL) में مَعَاذَالله कहीं कहीं गुड़ियों का त़वाफ़ दिखाया जाता है, येह गुनाह है । ज़मानए जाहिलिय्यत में का'बतुल्लाह शरीफ़ में तीन सो साठ बुत रखे हुए थे, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़त्ह़े मक्का के बा'द का'बतुल मुशर्रफ़ा को बुतों से पाक फ़रमा दिया, ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! आप भी अपने का'बा शरीफ़ के मॉडल में त़वाफ़ के मनाज़िर में गुड़ियां मत रखिये हां उन की जगह प्लास्टिक वग़ैरा के फूल रखने में ह़रज नहीं । (त़वाफ़े का'बा के अस्ल मन्ज़र की तस्वीर जिस में चेहरे वाज़ेह़ नज़र नहीं आते उस को मस्जिद या घर वग़ैरा में लगाना जाइज़ है, हां जिस तस्वीर को ज़मीन पर रख कर खड़े खड़े देखने से चेहरा वाज़ेह़ (साफ़) नज़र आए उस को घर या दुकान में आवेज़ां करना ना जाइज़ व गुनाह है)

《3》 **ऐसे** ''बाब'' (GATES) लगाना जाइज़ नहीं जिन में मोर वग़ैरा बने हुए हों । जानदारों की तसावीर की मज़म्मत में दो अह़ादीसे मुबारका पढ़िये और ख़ौफ़े ख़ुदावन्दी से लरज़िये : 《1》 (रह़मत के) फ़िरिश्ते उस घर में दाख़िल

नहीं होते जिस घर में कुत्ता या तस्वीर हो। (بُخاری ج۲ ص ۴۰۹ حدیث ۳۳۲۲) ﴿2﴾ जो कोई (जानदार की) तस्वीर बनाएगा **अल्लाह** पाक उस को उस वक़्त तक अ़ज़ाब देता रहेगा जब तक उस तस्वीर में रूह़ न फूंक दे और वोह उस में कभी भी रूह़ न फूंक सकेगा। (بُخاری ج۲ ص ۵۱ حدیث ۲۲۲۵)

﴿4﴾ **जश्ने विलादत** की ख़ुशी में बा'ज़ जगह गाने बाजे बजाए जाते हैं ऐसा करना शर्अ़न गुनाह है। इस सिल्सिले में दो रिवायात पेशे ख़िदमत हैं : ﴿1﴾ **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "मुझे ढोल और बांसरी तोड़ने का हुक्म दिया गया है।" (فِردَوسُ الاخبار ج۱ ص۴۸۳ حدیث۱۶۱۲) ﴿2﴾ ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ह़्ह़ाक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से रिवायत है : गाना दिल को ख़राब और रब्बे करीम को नाराज़ करने वाला है। (تفسیراتِ اَحمدیّہ ص ۶۰۳)

﴿5﴾ **मह़फ़िले** ना'त सजाने या रीकॉर्डेड ना'तें चलाने में अज़ान व अवक़ाते नमाज़ और मरीज़ों, दूध पीते बच्चों और आ़म लोगों की तक्लीफ़ों का ख़याल रखना ज़रूरी है। (ग़ैर मर्दों को आवाज़ जाए इस त़रह़ औ़रत की आवाज़ में ना'त शरीफ़ चलाने की शरीअ़त में मुमानअ़त है)

﴿6﴾ **गली** या सड़क वग़ैरा की ज़मीन पर इस त़रह़ सजावट करना, परचम गाड़ना जाइज़ नहीं जिस से रास्ता चलने और गाड़ी चलाने वाले मुसल्मानों को तक्लीफ़ हो।

﴿7﴾ **चराग़ां** (लाइटिंग) देखने के लिये औ़रतों का अजनबी मर्दों में बे पर्दा निकलना ह़राम व शर्मनाक नीज़ बा पर्दा औ़रतों का भी मुरव्वजा अन्दाज़ में मर्दों में इख़्तिलात़ (या'नी ख़ल्त़ मल्त़ होना) इन्तिहाई अफ़्सोस नाक है। नीज़ बिजली की चोरी भी ना जाइज़ है। लिहाज़ा इस सिल्सिले में बिजली

फ़राहम करने वाले इदारे से राबिता़ कर के जाइज़ ज़राएअ़ से चराग़ां की तरकीब बनाइये।

﴾8﴿ **जुलूसे** मीलाद में ह़त्तल इम्कान बा वुज़ू रहिये, नमाज़े बा जमाअ़त की पाबन्दी का ख़याल रखिये। आ़शिक़ाने रसूल नमाज़ की जमाअ़त तर्क करने वाले नहीं हुवा करते।

﴾9﴿ **जुलूसे** मीलाद में घोड़ागाड़ी और ऊंटगाड़ी मत लाइये क्यूं कि घोड़े और ऊंट के पेशाब और लीद से आ़शिक़ाने रसूल के कपड़े वग़ैरा पलीद होने का अन्देशा रहता है।

﴾10﴿ **जुलूस** में ''लंगरे रसाइल'' चलाइये या'नी मक्तबतुल मदीना के दीनी रसाइल और मदनी फूलों के मुख़्तलिफ़ पेम्फ़लेट नीज़ सुन्नतों भरे बयानात की V.C.Ds वग़ैरा ख़ूब तक़्सीम कीजिये, नीज़ फल और अनाज वग़ैरा तक़्सीम करने में भी फेंकने के बजाए लोगों के हाथों में दीजिये, ज़मीन पर गिरने बिखरने और क़दमों तले कुचल्ने से इन की बे हुर्मती होती है।

﴾11﴿ **इश्तिआ़ल** अंगेज़ ना'रेबाज़ी पुर वक़ार जुलूसे मीलाद को मुन्तशिर कर सकती है, पुर अम्न रहने में आप की अपनी भलाई है।

﴾12﴿ **ख़ुदा न ख़्वास्ता** अगर कहीं हलका फुलका पथराव हो भी जाए तब भी जज़्बात में आ कर जवाबी कारवाई पर न उतर आएं कि इस त़रह़ आप का **जुलूसे मीलाद** तित्तर बित्तर और दुश्मन की मुराद बार आवर.....।

ग़ुन्चे चटके, फूल महके हर त़रफ़ आई बहार
हो गई सुब्हे बहारां ईदे मीलादुन्नबी

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 380)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

जश्ने विलादत के बारे में मक्तूबे अ़त्तार

(**दरख़्वास्त :** हर साल माहे सफ़रुल मुज़फ़्फ़र के आख़िरी हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में येह मक्तूबे अ़त्तार पढ़ कर सुना दिया जाए। इस्लामी बहनें ज़रूरत के मुताबिक़ तब्दीली कर लें)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ सगे मदीना मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी عُفِیَ عَنْهُ की जानिब से तमाम आ़शिक़ाने रसूल इस्लामी भाइयों/ इस्लामी बहनों की ख़िदमतों में :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ عَلٰى كُلِّ حَال۔

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن! ! झूम जाइये ! जल्द ही माहे रबीउ़ल अव्वल आने वाला है, अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ जश्ने विलादत की धूम मचाने के लिये तय्यार हो जाइये।

तुम भी कर के उन का चरचा अपने दिल चमकाओ

ऊंचे में ऊंचा नबी का झन्डा घर घर में लहराओ

﴾1﴿ चांदरात को इन अल्फ़ाज़ में तीन बार मसाजिद में ए'लान करवाइये : ''तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों को मुबारक हो कि रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ का चांद नज़र आ गया है''

रबीउ़ल अव्वल उम्मीदों की दुन्या साथ ले आया

दुआ़ओं की क़बूलिय्यत को हाथों हाथ ले आया

﴾2﴿ बराहे करम रबीउ़ल अववल शरीफ़ की बरकत से आज ही से इस्लामी भाई हमेशा के लिये एक मुठ्ठी दाढ़ी और इस्लामी बहनें हमेशा के लिये शर्ई पर्दा करने की निय्यत करें। (मर्द का दाढ़ी मुंडाना या एक मुठ्ठी से घटाना और औ़रत का बे पर्दगी करना ह़राम और फ़ौरन तौबा कर के इन गुनाहों को हमेशा के लिये छोड़ देना ज़रूरी है)

झुक गया का'बा सभी बुत, मुंह के बल औंधे गिरे

दबदबा आमद का था, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 147)

﴾3﴿ **सुन्नतों** और नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने (या'नी हमेशा अ़मल होता रहे इस) का बेहतरीन फ़ार्मूला येह है कि तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें आज क्या क्या अ़मल किया इस के मुतअ़ल्लिक़ रोज़ाना "अपना मुह़ासबा (या'नी अपनी ज़ात से पूछगछ)" करते हुए **नेक आ'माल** का रिसाला पुर कर के हर इस्लामी माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाएं اِنْ شَآءَاللّٰه तक़्वे का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा और इ़श्क़े रसूल के जाम भर भर कर पीने को मिलेंगे।

बदलियां रह़मत की छाईं, बूंदियां रह़मत की आईं

अब मुरादें दिल की पाईं, आमदे शाहे अ़रब है

(क़बालए बख़्शिश, स. 337)

﴾4﴿ **दा'वते इस्लामी** के ज़िम्मेदारान समेत तमाम इस्लामी भाई निय्यत कीजिये कि हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत (सुवाल जवाब शुरूअ़ होने से कम अज़ कम 1 घन्टा 12 मिनट) शिर्कत और हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़

में ''रात ए'तिकाफ़'' भी किया करेंगे, येह भी निय्यत कीजिये कि हर माह तीन दिन के, हर 12 माह में एक माह और ज़िन्दगी में कम अज़ कम एक बार 12 माह के सुन्नतें सीखने सिखाने के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र फ़रमाएंगे। तमाम आ़शिक़ाने रसूल ब शुमूल निगरान व ज़िम्मेदारान **रबीउ़ल अव्वल शरीफ़** में बारगाहे रिसालत में ईसाले सवाब की निय्यत से कम अज़ कम तीन दिन के लिये सुन्नतें सीखने सिखाने के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करें और रोज़ाना ''घर दर्स'' भी दें या सुनें और इस्लामी बहनें, इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शुरूअ़ से ले कर आख़िर तक शिर्कत, रोज़ाना ''घर दर्स'' (सिर्फ़ घर की इस्लामी बहनों और महरमों में) जारी करें।

मैं मुबल्लिग़ बनूं सुन्नतों का, ख़ूब चरचा करूं सुन्नतों का

या ख़ुदा ! दर्स दूं सुन्नतों का, हो करम ! बहरे ख़ाके मदीना

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 189)

﴾5﴿ **अपनी** मस्जिद, घर, दुकान, कारख़ाने वग़ैरा पर **12** वरना कम अज़ कम एक मदनी परचम **रबीउ़ल अव्वल शरीफ़** की चांदरात से ले कर 12 रबीउ़ल अव्वल तक लहराइये। बसों, वेगनों, ट्रकों, ट्रॉलों, टेक्सियों, रिक्शों, रेढ़ों, घोड़ा गाड़ियों वग़ैरा पर मदनी परचम बांध दीजिये। अपनी साइकिल, स्कूटर और कार पर भी लगाइये। اِنْ شَآءَاللّٰه हर त़रफ़ मदनी परचमों की बहारें मुस्कुराती नज़र आएंगी। उ़मूमन ट्रकों के पीछे जानदारों की बड़ी बड़ी तस्वीरें और फ़ुज़ूल से अश्आ़र लिखे होते हैं। हो सके तो अपनी गाड़ियों पर येह लिखवाइये : **मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है।**

दुआए अ़त्तार : या रब्बे मुस्त़फ़ा ! जो कोई अपनी स्कूटरों (पर सिर्फ़ आगे की त़रफ़ और) कारों, टेक्सियों, बसों, ट्रकों, ट्रॉलों, पानी के टेंकों, वेगनों, रिक्शों, सूज़ूकियों वग़ैरा पर आगे या पीछे या दोनों त़रफ़ **''मुझे दा'वते इस्लामी से प्यार है''** लिखे या लिखवाए या इस का स्टीकर लगाए या लगवाए। उस की गाड़ी की एक्सीडन्ट (Accident) से ह़िफ़ाज़त फ़रमा और उस को बे ह़िसाब बख़्श दे, जो किसी गाड़ी वाले को इस काम के लिये तय्यार करे उस के ह़क़ में भी येह दुआ़एं क़बूल फ़रमा। आमीन।

ज़रूरी एह़तियात़ : अगर झन्डे पर सब्ज़ गुम्बद, नक़्शे ना'ले पाक या कोई लिखाई हो तो इस बात का ख़याल रखिये कि न वोह फटे, न उड़ कर ज़मीन पर तशरीफ़ लाए। अगर अदब नहीं हो पाता तो ऐसा परचम मत लहराइये, 12 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ का दिन जैसे ही तशरीफ़ ले जाए फ़ौरन तमाम झन्डे और लाइटिंग का सामान उतार लीजिये। बिल ख़ुसूस मदनी मराकिज़ फ़ैज़ाने मदीना व मसाजिदे दा'वते इस्लामी व जामिअ़तुल मदीना व मद्रसतुल मदीना (बच्चों और बच्चियों वाले) इन से भी बर वक़्त येह तरकीब कर ली जाए।

नबी का झन्डा ले कर निकलो दुन्या पर छा जाओ

नबी का झन्डा अम्न का झन्डा घर घर में लहराओ

﴾6﴿ **अपने** घर पर 12 झालरों (या'नी लड़ियों) या कम अज़ कम 12 बल्बों से नीज़ अपने मह़ल्ले में भी 12 दिन तक और अपनी मस्जिद पर वहां के उ़र्फ़ के मुताबिक़ चराग़ां (या'नी लाइटिंग) कीजिये। जहां मस्जिद के चन्दे से 12 दिन तक चराग़ां का उ़र्फ़ (या'नी मा'मूल) न हो तो इस काम के लिये अलग से चन्दा कर के 12 दिन तक चराग़ां किया जा सकता है। सारे अ़लाक़े

को मदनी परचमों और रंग बरंगे बल्बों से सजा कर दुल्हन बना दीजिये । मुम्किन हो तो मस्जिद, घर की छत और चौक वग़ैरा पर राहगीरों और सुवारियों को तक्लीफ़ से बचाते हुए हुकूके़ आ़म्मा तलफ़ किये बिग़ैर फ़ज़ा में मुअ़ल्लक़ (या'नी लटके हुए) 12 मीटर के या मौक़अ़ की मुनासबत से बड़े बड़े परचम लहराइये । बीच सड़क पर परचम मत गाड़िये कि इस से ट्राफ़िक का निज़ाम मुतअस्सिर होता है, परचम गाड़ने के लिये फ़ुटपाथ (FOOTPATH) भी मत खोदिये, ख़बरदार ! गली वग़ैरा में कहीं भी इस त़रह़ की सजावट न कीजिये जिस से लोगों का रास्ता तंग हो और उन की ह़क़ तलफ़ी और दिल आज़ारी हो । (याद रहे ! इन सजावटों के लिये भी बिजली चोरी करना ह़राम है, लिहाज़ा इस सिल्सिले में बिजली फ़राहम करने वाले इदारे से राबित़ा कर के जाइज़ तरकीब बनाइये)

मशरिक़ो मग़रिब में इक इक बामे का 'बा पर भी एक

नस्ब परचम हो गया, अह्लंव व सह्लन मरह़बा

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 146)

﴾7﴿ **हर** इस्लामी भाई ह़स्बे तौफ़ीक़ मक्तबतुल मदीना के दीनी रसाइल और मदनी फूलों के मुख़्तलिफ़ पेम्फ़लेट जुलूसे मीलाद में बांटे और इस्लामी बहनें भी तक़्सीम करवाएं । इसी त़रह़ सारा साल अपनी दुकान वग़ैरा पर ''तक़्सीमे रसाइल'' का एहतिमाम फ़रमा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये । शादी की दा'वतों और ईसाले सवाब के इज्तिमाआ़त में और मर्ह़ूमों के ईसाले सवाब की ख़ातिर भी ''तक़्सीमे रसाइल'' की तरकीब कीजिये और दूसरों को इस की तरग़ीब दीजिये । और सभी हफ़्तावार

रिसाला पढ़ने या सुनने की सआ़दत ह़ासिल कीजिये, और हर साल मज़ीद 12 माह के लिये ''माहनामा फ़ैज़ाने मदीना'' की बुकिंग करवाएं।

चार सू रह़मतों की हवाएं चलीं, हो गई जिस से सारी फ़ज़ा दिलनशीं
मुस्कुराओ सभी आ गए हैं नबी, ग़म के मारो तुम्हारी ख़ुशी के लिये

﴾8﴿ पेम्फ़लेट ''**जश्ने विलादत** के 12 मदनी फूल'' मुम्किन हो तो 112 वरना कम अज़ कम 12 और मज़ीद हो सके तो रिसाला ''सुब्हे बहारां'' 12 अ़दद मक्तबतुल मदीना से ख़रीद कर तक़्सीम कीजिये। ख़ुसूसन उन तन्ज़ीमों के सरबराहों तक पहुंचाइये जो रबीउ़ल अव्वल में लाइटिंग करते या मह़फ़िले ना'त या जुलूसे मीलाद की तरकीब फ़रमाते हैं। रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ के दौरान (बालिग़ान व बालिग़ात) किसी सुन्नी आ़लिम या इमामे मस्जिद, मुअज़्ज़िन या ख़ादिमे मस्जिद की कुछ न कुछ माली ख़िदमत करें और ज़हे नसीब ! हर माह येह सआ़दत ह़ासिल फ़रमाएं। शादियों के मवाक़ेअ़ पर ''शादी कार्ड'' के साथ मक्तबतुल मदीना का दीनी रिसाला भी मुन्सलिक (ATTACH) फ़रमाइये। ईद काड्र्ज़ के बजाए दीनी किताबें और रिसाले देने का रवाज डालिये ताकि जो रक़म ख़र्च हो उस से दीन का भी फ़ाएदा मिले। शादी ग़मी की तक़रीबात में अपने यहां मक्तबतुल मदीना से तरकीब बना कर बस्ता (STALL) लगवाइये और मेहमानों में ह़स्बे तौफ़ीक़ इस्लामी किताबें और रिसाले मुफ़्त तक़्सीम कीजिये।

विलादते शहे दीं हर ख़ुशी की बाइस है
हज़ार ईद से भारी है बारहवीं तारीख़

(ज़ौक़े ना'त, स. 122)

﴾9﴿ शहरों, क़स्बों और दीहातों वग़ैरा में अ़लाक़ाई मुशावरत का निगरान 12 दिन तक रोज़ाना जुदा जुदा मसाजिद में अ़ज़ीमुश्शान सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त

मुन्अ़क़िद करे। शख़्सय्यात के घरों, आ़शिक़ाने रसूल की दुकानों, मार्केटों, कारख़ानों, ता'लीमी इदारों वग़ैरा में भी येह इज्तिमाआ़त कीजिये। (ज़िम्मेदार इस्लामी बहनें मदनी मर्कज़ के दिये हुए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ घरों में इज्तिमाआ़त फ़रमाएं)

लब पर ना'ते रसूले अकरम हाथों में परचम

दीवाना सरकार का कितना प्यारा लगता है

﴾10﴿ **ग्यारह** रबीउ़ल अव्वल की शाम को वरना 12वीं शब को अच्छी अच्छी निय्यतें कर के ग़ुस्ल कीजिये। हो सके तो इस ईदों की ईद की ता'ज़ीम की निय्यत से लिबास, इ़मामा, सरबन्द, टोपी, सर पर ओढ़ना चाहें तो सफ़ेद चादर, पर्दे में पर्दा करने के लिये चादर, मिस्वाक, जेब का रूमाल, चप्पल, तस्बीह़, इ़त्र की शीशी, हाथ की घड़ी, क़लम, क़ुफ़्ले मदीना पेड वग़ैरा अपने इस्ति'माल की हर चीज़ हो सके तो नई लीजिये। (मजलिसे मीलाद शरीफ़ और दीगर मजालिसे ख़ैर के लिये ग़ुस्ल करना मुस्तह़ब है। (देखिये : नमाज़ के अह़काम, सफ़ह़ा 115) इस्लामी बहनें भी अपनी ज़रूरत की जो जो चीज़ें मुम्किन हों वोह नई लें)

आई नई ह़ुकूमत सिक्का नया चलेगा

आ़लम ने रंग बदला सुब्हे शबे विलादत

(ज़ौक़े ना'त, स. 95)

﴾11﴿ **12वीं** रात **इज्तिमाए़ मीलाद** में गुज़ार कर ब वक़्ते सुब्हे सादिक़ अपने हाथों में मदनी परचम उठाए दुरूदो सलाम पढ़ते हुए अश्कबार आंखों से "सुब्हे बहारां" का इस्तिक़्बाल कीजिये। बा'द नमाज़े फ़ज्र **सलाम करने के बा'द ईद मुबारक** कह कर एक दूसरे से गर्मजोशी के साथ मुलाक़ात

फ़रमाइये और सारा दिन ईद की मुबारक बाद पेश करते और ईद मिलते रहिये।

ईदे मीलादुन्नबी तो ईद की भी ईद है
बिलयक़ीं है ईदे ईदां ईदे मीलादुन्नबी

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 380)

﴾12﴿ **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, **मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पीर शरीफ़ को रोज़ा रख कर अपना यौमे विलादत मनाते रहे, आप भी यादे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में 12 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ को रोज़ा रख कर मदनी परचम उठाए **जुलूसे मीलाद** में शरीक हों, जहां तक मुम्किन हो बा वुज़ू रहिये, लब पर दुरूदो सलाम और ना'तों के नग़मे सजाए, निगाहें झुकाए पुर वक़ार त़रीक़े पर चलिये, उछलकूद मचा कर किसी को तन्क़ीद का मौक़अ़ मत दीजिये। (ज़िम्मादाराने दा'वते इस्लामी जुलूसे मीलाद में वोही ना'रे लगाएं या गाड़ियों में वोही कलाम चलाएं जो मदनी मर्कज़ की त़रफ़ से जारी कर्दा हों)

रबीए़ पाक तुझ पर अहले सुन्नत क्यूं न क़ुरबां हों
कि तेरी बारहवीं तारीख़ वोह जाने क़मर आया

(क़बालए बख़्शिश, स. 65)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

जश्ने विलादत मनाने की निय्यतें

"**बुख़ारी शरीफ़**" की सब से पहली ह़दीसे मुबारक है : **اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّات۔** या'नी "आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है।" (بُخاری ج۱ ص۵) याद रखिये ! हर नेक अ़मल में अच्छी निय्यत होना ज़रूरी है

वरना सवाब नहीं मिलेगा । **जश्ने विलादत** मनाने में भी सवाब कमाने की निय्यत ज़रूरी है । सवाब की निय्यत के लिये अ़मल का शरीअ़त के मुत़ाबिक़ और ज़ेवरे इख़्लास से मुज़य्यन होना शर्त़ है। अगर किसी ने दिखावे और वाह वा करवाने की ख़ात़िर **जश्ने विलादत** मनाया, या सवाब की निय्यत तो की मगर इस के लिये बिजली की चोरी की, डरा धमका कर ज़बर दस्ती चन्दा वुसूल किया, मुसल्मानों को ईज़ा दी और हुक़ूक़े आ़म्मा तलफ़ (या'नी लोगों के ह़क़ ज़ाएअ़) किये, मरीज़ों, सोने वालों और दूध पीते बच्चों वग़ैरा को तक्लीफ़ पहुंचने का इ़ल्म होने के बा वुजूद ऊंची आवाज़ से लाउड स्पीकर चलाया तो की जाने वाली सवाब की निय्यत बेकार है बल्कि गुनाहगार है । अच्छी अच्छी निय्यतें जितनी ज़ियादा होंगी सवाब भी उतना ही ज़ियादा मिलेगा । **16** निय्यतें पेश की जाती हैं मगर येह ना मुकम्मल हैं, इ़ल्मे निय्यत रखने वाला निय्यतें बढ़ा सकता है । अब इन में से जिन पर अ़मल हो सकता हो वोह निय्यतें कर लीजिये :

"जश्ने मीलादे नबी मरह़बा" के सोलह ह़ुरूफ़ की निस्बत से जश्ने विलादत मनाने की 16 निय्यतें

﴿1﴾ हुक्मे कुरआनी وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿۱۱﴾ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और अपने रब की ने'मत का ख़ूब चरचा करो । (پ۳۰، الضحٰی:۱۱)) पर अ़मल करते हुए **अल्लाह** पाक की सब से बड़ी ने'मत (या'नी **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का ख़ूब चरचा (या'नी ख़ूब तज़्किरा)

करूंगा ﴾2﴿ रिज़ाए इलाही पाने के लिये जश्ने विलादत की ख़ुशी में चराग़ां (लाइटिंग) करूंगा ﴾3﴿ जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने शबे विलादत जो तीन झन्डे गाड़े थे इस की पैरवी में झन्डे लहराऊंगा ﴾4﴿ धूमधाम से जश्ने विलादत मना कर ग़ैर मुस्लिमों पर अ़ज़मते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सिक्का बिठाऊंगा (घर घर चराग़ां और मदनी परचम देख कर कई ग़ैर मुस्लिम शायद ह़ैरान होते होंगे कि मुसल्मानों को अपने नबी की विलादत (BIRTH) से बहुत ही प्यार है) ﴾5﴿ ज़ाहिरी सजावट के साथ साथ तौबा व इस्तिग़फ़ार के ज़रीए़ अपना बात़िन भी सजाऊंगा ﴾6﴿ बारहवीं रात को इज्तिमाए़ मीलाद और ﴾7﴿ ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दिन निकलने वाले जुलूसे मीलाद में शिर्कत कर के ज़िक्रे ख़ुदा व मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सआ़दतें और ﴾8﴿ उ़लमा व ﴾9﴿ सुलह़ा (या'नी नेक बन्दों) की ज़ियारतें और ﴾10﴿ आ़शिक़ाने रसूल के क़ुर्ब (या'नी नज़्दीकी) की बरकतें ह़ासिल करूंगा ﴾11﴿ जुलूसे मीलाद में बा इ़मामा और जहां तक हो सका ﴾12﴿ बा वुज़ू रहूंगा और ﴾13﴿ जुलूस के दौरान भी मस्जिद की नमाज़े बा जमाअ़त नहीं छोड़ूंगा ﴾14﴿ कुछ न कुछ मक्तबतुल मदीना के दीनी रसाइल वग़ैरा तक़्सीम करूंगा ﴾15﴿ **कोशिश** कर के कम अज़ कम 12 इस्लामी भाइयों को मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की दा'वत दूंगा ﴾16﴿ जुलूसे मीलाद में जहां तक हो सका ज़बान को फ़ुज़ूल बोलने और आंख को फ़ुज़ूल देखने से बचाते हुए तवज्जोह से ना'तें सुनने और ख़ूब दुरूदो सलाम पढ़ने की कोशिश करूंगा।

या रब्बे मुस्त़फ़ा ! हमें ख़ुशदिली और अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ **जश्ने विलादत** मनाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और जश्ने विलादत के

सदक़े हमें जन्नतुल फ़िरदौस में बे हि़साब दाखि़ला दे कर अपने प्यारे प्यारे आखि़री नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस इनायत कर ।

विलादत का सदक़ा पड़ोसी बनाना

शहा ! ख़ुल्द में जब येह बदकार आए

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 501)

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَالِهٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب   صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ लेने के बा'द सवाब की निय्यत से किसी को दे दीजिये

गमे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे हि़साब
जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा
के पड़ोस का त़ालिब

27 मुहर्रमुल ह़राम 1442 सि.हि.

16-09-2020

مآخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرانِ مجید		سبلُ الہدی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
تفسیراتِ احمدیہ		السیرۃُ النبویۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	السیرۃُ الحلبیۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مسلم	دار ابن حزم بیروت	مدارجُ النبوت	مرکز اہل سنت برکات رضا ہند
مصنف عبدُ الرزّاق	دار الکتب العلمیۃ بیروت	ماثبت بالسنّۃ	نعیمیہ رضویہ
معجم اوسط	دار الکتب العلمیۃ بیروت	تذکرۃُ الواعظین	بمبئی ہند
ھواتفُ الجنان	دار البشائر دمشق	فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن لاہور
فردوسُ الاخبار	دار الکتاب العربی بیروت	حدائقِ بخشش	مکتبۃ المدینہ
عمدۃُ القاری	دار الفکر بیروت	ذوقِ نعت	مکتبۃ المدینہ
دلائلُ النبوۃ	المکتبۃ العصریۃ بیروت	قبالۂ بخشش	مکتبۃ المدینہ
اخلاقُ النبی وآدابہ	دار الکتاب العربی بیروت	دیوانِ سالک مع رسائلِ نعیمیہ	نعیمی کتب خانہ گجرات
المواھبُ اللدنیۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت	وسائلِ بخشش	مکتبۃ المدینہ

जश्ने विलादत के नारे

सरकार की आमद मरह़बा
सरदार की आमद मरह़बा
सालार की आमद मरह़बा
मुख़्तार की आमद मरह़बा
ग़म ख़्वार की आमद मरह़बा
ताजदार की आमद मरह़बा
हुज़ूर की आमद मरह़बा
पुरनूर की आमद मरह़बा
ग़यूर की आमद मरह़बा
उस नूर की आमद मरह़बा
रसूल की आमद मरह़बा
मक़्बूल की आमद मरह़बा
आमिना के फूल की आमद मरह़बा
वालिदे बतूल की आमद मरह़बा
ह़बीब की आमद मरह़बा
लबीब की आमद मरह़बा
ह़सीब की आमद मरह़बा
मुजीब की आमद मरह़बा
मुनीब की आमद मरह़बा
नजीब की आमद मरह़बा

अच्छे की आमद मरह़बा
सच्चे की आमद मरह़बा
बशीर की आमद मरह़बा
नज़ीर की आमद मरह़बा
मुनीर की आमद मरह़बा
ख़बीर की आमद मरह़बा
बसीर की आमद मरह़बा
नसीर की आमद मरह़बा
शहीर की आमद मरह़बा
ज़हीर की आमद मरह़बा
रऊफ़ की आमद मरह़बा
रह़ीम की आमद मरह़बा
करीम की आमद मरह़बा
नईम की आमद मरह़बा
अ़लीम की आमद मरह़बा
ह़लीम की आमद मरह़बा
ह़ामिद की आमद मरह़बा
माजिद की आमद मरह़बा
आ़बिद की आमद मरह़बा
साजिद की आमद मरह़बा

तबीब की आमद मरहबा
नक़ीब की आमद मरहबा
सुल्तान की आमद मरहबा
बुरहान की आमद मरहबा
ग़ैबदान की आमद मरहबा
अकरम की आमद मरहबा
आ'ज़म की आमद मरहबा
रशीद की आमद मरहबा
यासीन की आमद मरहबा
ताहा की आमद मरहबा
औला की आमद मरहबा
आ'ला की आमद मरहबा
रहबर की आमद मरहबा
अफ़्सर की आमद मरहबा
सरवर की आमद मरहबा
अज़्हर की आमद मरहबा
रफ़ीक़ की आमद मरहबा
शफ़ीक़ की आमद मरहबा
साबिर की आमद मरहबा
शाकिर की आमद मरहबा
अरबी की आमद मरहबा
क़रशी की आमद मरहबा
हाशिमी की आमद मरहबा

मस्ऊ़द की आमद मरहबा
मश्हूद की आमद मरहबा
शाफ़ेए़ उमम की आमद मरहबा
दाफ़ेए़ रन्जो अलम की आमद मरहबा
अमीन की आमद मरहबा
मतीन की आमद मरहबा
मुबीन की आमद मरहबा
मुईन की आमद मरहबा
हाज़िर की आमद मरहबा
नाज़िर की आमद मरहबा
ताहिर की आमद मरहबा
ज़ाहिर की आमद मरहबा
हम्माद की आमद मरहबा
जवाद की आमद मरहबा
हकीम की आमद मरहबा
अज़ीम की आमद मरहबा
आक़ा की आमद मरहबा
दाता की आमद मरहबा
साक़िये कौसर की आमद मरहबा
मक्की की आमद मरहबा
मदनी की आमद मरहबा
मौला की आमद मरहबा
आक़ाए अत्तार की आमद मरहबा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

मीलाद मनाने वालों से सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खुश होते हैं

एक आ़लिम साहि़ब رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : اَلْحَمْدُ لِلّٰه मुझे ख़्वाब में अल्लाह पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई, मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या आप को मुसल्मानों का हर साल आप की विलादते मुबारक की खुशियां मनाना पसन्द आता है ? इर्शाद फ़रमाया : "जो हम से खुश होता है हम भी उस से खुश होते हैं।"

(مُلَخَّصاً, फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 754, سُبُلُ الْهُدٰى ج۱ ص۳۶۳)

M.R.P. 18/-

01081781

DAWAT-E-ISLAMI

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372

Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200

421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi

011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply

feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net